नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत के लिए अरब - इस्लामी नाटो के मायने?

दोहा में हाल ही में संपन्न अरब-इस्लामी सम्मेलन ने पश्चिम एशिया की राजनीति को नई दिशा देने वाले कई सवाल खड़े कर दिए हैं. इजरायल के हमले के बाद कतर की अगुवाई में जुटे नेताओं ने पहली बार इतनी खुलकर नाटो जैसी सुरक्षा छतरी की जरूरत पर बल दिया. फिलिस्तीन का सवाल, इजरायल की बढ़ती सैन्य ताकत और अमेरिका का स्पष्ट झुकाव- इन सबने इस विचार को बल दिया कि अरब और इस्लामी राष्ट्र यदि संगठित नहीं हुए, तो भविष्य में उनकी स्थिति और कमजोर होगी. नाटो का उदाहरण इस सोच की प्रेरणा है. दरअसल, शीतयुद्ध के दौर में पश्चिमी देशों ने अपनी सामूहिक सुरक्षा के लिए यह सैन्य संगठन खड़ा किया था. आज वही ढाल अमेरिका और यूरोप को आश्वस्त करती है. प्रश्न यह है कि क्या अरब देश भी इजरायल और उसके पश्चिमी सहयोगियों के विरुद्ध वैसी ही साझा दीवार बना पाएंगे ?

इतिहास गवाह है कि अरब-इजरायल संघर्ष केवल सीमाओं का विवाद नहीं, बल्कि पहचान, धर्म और सत्ता का टकराव भी है. 1948 से लेकर योम किप्पुर युद्ध तक अरब देशों ने कई मोर्चों पर इजरायल का सामना किया, किंतु हार झेलनी पड़ी. इसके बाद धीरे-धीरे यह धारणा बनी कि अकेले किसी देश के बूते यह चुनौती असंभव है. यही सोच दोहा सम्मेलन में 'इस्लामी नाटो' की चर्चा का आधार बनी. इजरायल की तकनीकी और सैन्य बढ़त असंदिग्ध है. आयरन डोम जैसे मिसाइल डिफेंस सिस्टम, साइबर युद्ध क्षमता और अमेरिका का अडिग समर्थन उसे क्षेत्र की सबसे प्रभावशाली शक्ति बनाता है. इसके बरअक्स अरब देश आंतरिक मतभेदों, अधिनायकवादी शासन और परस्पर अविश्वास से ग्रस्त हैं. सऊदी अरब और ईरान जैसे क्षेत्रीय दिग्गज एक-दूसरे पर भरोसा नहीं करते. कई देशों ने अब्राहम समझौते के तहत इजरायल से संबंध भी सामान्य किए हैं. ऐसे में साझा मोर्चे की कल्पना आकर्षक जरूर है, पर वास्तविकता से दूर दिखती है. फिर भी, इस सोच के निहितार्थ गहरे हैं. यह संकेत है कि फिलिस्तीन का सवाल आज भी अरब चेतना के केंद्र में है. गाजा की त्रासदी और इजरायल की आक्रामक रणनीति ने मुस्लिम जनमानस में गुस्सा भड़काया है. पाकिस्तान जैसे परमाणु संपन्न देश की भागीदारी इस चर्चा को और गंभीर बनाती है.

यदि भविष्य में वाकई कोई सामूहिक सैन्य संगठन बनता है, तो यह मध्य-पूर्व की शक्ति-संतुलन की तस्वीर बदल देगा .भारत के लिए यह परिदृश्य विशेष महत्व रखता है. भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा खाड़ी देशों से पूरा होता है. वहां भारतीय प्रवासी मजदूरों की संख्या करोड़ों में है. भारत के लिए स्थिर और सुरक्षित पश्चिम एशिया प्राथमिक रणनीतिक लक्ष्य है. किसी भी प्रकार का अरब-इजरायल टकराव भारत को सीधे प्रभावित करेगा .भारत की विदेश नीति संतुलन पर आधारित रही है. एक ओर इजरायल भारत का भरोसेमंद रक्षा और तकनीकी साझेदार है, तो दूसरी ओर अरब राष्ट्रों के साथ भारत के ऐतिहासिक और आर्थिक रिश्ते गहरे हैं. यदि इस्लामी 'नाटो' जैसी पहल आगे बढ़ती है, तो भारत को अत्यधिक सावधानी से कूटनीति साधनी होगी. नई दिल्ली को न तो इजरायल को खोना है और न ही अरब देशों का विश्वास. यही संतुलन भारत की वास्तविक सामरिक ताकत है.

कुल मिलाकर दोहा सम्मेलन की चर्चा चाहे ठोस संगठन में बदल पाए या नहीं, यह स्पष्ट है कि मध्य पूर्व का भू-राजनीतिक तनाव एक नए मोड़ पर है. अरब देशों की असुरक्षा और इजरायल की आक्रामकता ने मिलकर एक अस्थिर समीकरण खड़ा कर दिया है. भारत के लिए यह समय है कि वह ऊर्जा, प्रवासी और सुरक्षा-तीनों मोर्चों पर अपनी रणनीति और अधिक मजबूत करे. पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच भारत की भूमिका केवल दर्शक की नहीं, बल्कि सक्रिय मध्यस्थ की हो सकती है.

कार्यान्वयन की कला में माहिर पीएम मोदी

हसमुख अधिया

> मोदी जी हमेशा ही बहुत से लोगों की पहुँच में रहते हैं. इससे उन्हें कई दृष्टिकोणों को समझने का अवसर मिलता है. वे अपने आस-पास के लोगों के किसी छोटे से समूह तक ही सीमित नहीं रहते. इसलिए किसी के लिए भी उन्हें गुमराह करना मुश्किल है. उनके कार्यालय में प्रधान सचिव के पद पर कार्यरत होने के नाते, वे हमें कामों की एक लंबी सूची थमा देते थे. उनके साथ आधे घंटे की एक बैठक में ही हमारी डायरी में करने वाले कार्य सूची के दो पन्ने भर जाते थे. उनके निर्देश नोट करने के बावजूद, कभी-कभी हम उन्हें रिपोर्ट करना भूल जाते थे. लेकिन वे नहीं भूलते थे. वे हमें फिर से याद दिलाते. उनका तीसरा रिमाइंडर भी इतना विनम्र होता - हसमुख भाई, फलां चीज़ पर कुछ हुआ? इतने सौम्य तरीके से इशारा दिए जाने पर हम तुरंत ही अपने काम पर लग जाते थे. बिना गुस्सा या अधीरता दिखाए, कार्यान्वयन की यह उनकी कला है.

मैंने नरेंद्र मोदीजी के अधीन दो दशकों तक केंद्र और राज्य सरकार के विभिन्न स्तरों पर एक सिविल सेवक के रूप में काम किया है. लेकिन उनके साथ मेरा सबसे करीबी कार्य अनुभव तब रहा, जब मैंने गुजरात में मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव के रूप में सीधे उनके कार्यालय में दो साल - वर्ष 2004 से 2006 तक - काम किया. उनकी व्यापक दूरदर्शिता और भविष्य को देखपाने की क्षमता के बारे में तो सभी जानते हैं, लेकिन उनके कार्यान्वयन की कला और मंत्रियों व नौकरशाहों की एक बड़ी टीम से काम करवाने की उनकी क्षमता के बारे में कम ही लोग जानते हैं. प्रबंधन के एक छात्र के रूप में, मैंने इसे करीब से देखा है. मैंने पाया कि प्रबंधन के औपचारिक अध्ययन के बिना भी उन्होंने अपने नेतृत्व में प्रबंधन के कुछ सर्वोत्तम सिद्धांतों का सहज रूप से उपयोग किया है.

सबसे पहले आती है, उपयुक्त कार्य के लिए बिल्कुल सही व्यक्ति की पहचान करने की उनकी क्षमता. उनमें किसी भी व्यक्ति में छिपी प्रतिभा को पहचानने की स्वाभाविक क्षमता है और वे ऐसे व्यक्ति को उच्च-स्तरीय पद के लिए चुन लेते हैं. इस प्रक्रिया में वे शायद ही कभी गलत हुए हों. किसी भी पद के लिए सही व्यक्ति का चयन करने के बाद, उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को कार्यकाल की स्थिरता प्रदान की, जो शासन के लिए अत्यंत आवश्यक है.

फिर बारी आती है उनकी हर मुद्दे की बारीकियों और विस्तार में जाने की आदत की. किसी भी मीटिंग में उनके सामने दी गई सभी प्रेजेंटेशन को वह धैर्यपूर्वक सुनते हैं. फिर विषय को समझने के लिए वह सही सवाल पूछते हैं. इसके बाद वह कुछ अनोखे वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं जो प्रतिभागियों को सुखद आश्चर्य से भर देते हैं. वे सभी आश्चर्य करते हैं कि ये बातें उन्हें पहले क्यों नहीं सूझीं. मैंने उन्हें अपने कुछ भविष्यवादी विचारों से शीर्ष सलाहकारों को भी चौंकाते देखा है, जिन्होंने इनके बारे में कभी सोचा भी नहीं होता.

मोदी जी भारत सरकार के हर मंत्रालय की समीक्षा बैठकें करते रहते हैं, चाहे वह खेल मंत्रालय हो, आयुष मंत्रालय हो या सामाजिक न्याय मंत्रालय. ये समीक्षा बैठकें विभागों को हर समय बिल?कुल सक्रिय रखती हैं. मैंने 2014 से 2018 तक वित्त मंत्रालय में अपने चार साल के कार्यकाल के दौरान देखा कि उन्होंने उन चार वर्षों के दौरान प्रत्येक मंत्रालय के काम की एक से ज़्यादा बार समीक्षा की. मोदी जी एक बेहतरीन वक्ता हैं, यह बात तो सभी जानते हैं. लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि जटिल विचारों को नौकरशाहों या मंत्रियों के समूह तक संप्रेषित कर पाने की उनकी क्षमता भी लाजवाब है. वे अपनी बात को सरल शब्दों और उदाहरणों से समझाते हैं.

मोदी जी से जो भी व्यक्तिगत रूप से मिलता है, वह उनकी सुनने की क्षमता से हमेशा प्रभावित होता है. चाहे आप उनसे दस मिनट के लिए मिलें या एक घंटे के लिए, वे आपकी आँखों में देखकर बात करेंगे, कभी भी इधर-उधर देखकर आपको यह एहसास नहीं करवाएंगे कि वे व्यस्त हैं. इतने काम के बोझ तले दबे व्यक्ति के लिए यह एक अद्भुत गुण है. उनके कार्यालय में उनकी मेज पर कागज़ का एक टुकड़ा भी नहीं पड़ा होता. अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने और वर्तमान में जीने की उनकी क्षमता अद्भुत है. उनसे मिलने वाला हर व्यक्ति उनकी इतनी तेज़ याददाश्त देखकर दंग रह जाता है कि उन्हें उसका नाम और उसके साथ पहले कभी हुआ संवाद भी याद है. किसी को उसके नाम से पुकारने की उनकी यह कला लोगों कोतुरंत ही अपना बना लेती है. एक बार मैंने उनसे पूछा था कि उन्हें इतने सारे नाम कैसे याद रहते हैं. उन्होंने साफ़-साफ़ कहा कि अगर अब वे नाम याद करने की कोशिश करें तो उन्हें 50 नाम भी याद नहीं आएँगे. लेकिन जब वे किसी का चेहरा देखते हैं, तो उसका नाम तुरंत ही उनके दिमाग में उभर आता है. उन्होंने माना कि यह उन्हें ईश्वर का एक वरदान है.

(लेखक एक आईएएस अधिकारी हैं, जो भारत के वित्त एवं राजस्व सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं.)

मध्य क्षेत्र की डायरी

टोल टैक्स बंद करवाने के लिए धरने पर बैठे हरदा विधायक डॉ. दोगने

दिलीप झा

हरदा जिले से निकलने वाले नेशनल हाईवे फोर-लेन सड़क मार्ग पर आवागमन करने वाले यात्रियों व क्षेत्रवासियों से खातेगांव टोल नाके पर सरकार द्वारा टोल टैक्स लेना शुरू कर दिया गया है. गत दिनों इसके विरोध में हरदा विधायक डॉ. रामकिशोर दोगने समस्त कांग्रेसजनों के साथ खातेगांव टोल नाके पर पहुंचकर धरने पर बैठ गए. हरदा विधायक द्वारा कहा गया कि नेशनल हाईवे फोर-लेन सड़क मार्ग का कार्य पूर्ण नही हुआ है. सड़क मार्ग पर जगह-जगह गड्ढे हो रहे है परन्तु सरकार द्वारा उक्त मार्ग से अवागमन करने वाले यात्रियों से टोल टैक्स लेना प्रारंभ कर दिया गया है जो की अनुचित व न्याय संगत नही है.

हरदा विधायक के धरने पर बैठने की खबर प्रशासन को लगते ही प्रशासन द्वारा खातेगांव एसडीएम और एनएचआई के अधिकारी मौके पर पहुंचे. हरदा विधायक डॉ. दोगने से धरना समाप्त करने हेतु अनुरोध किया गया परन्तु विधायक नही माने. इसके पश्चात खातेगांव एसडीएम और एनएचआई के अधिकारियों ने हरदा विधायक डॉ. दोगने सहित समस्त कांग्रेसजनों को आश्वस्त किया कि वह अपने वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा कर नियमों की जानकारी प्राप्त करेंगे और नियमानुसार टोल टैक्स लिया जाना चाहिए अथवा नहीं इस पर कार्यवाही करेंगे.

इसके पश्चात हरदा विधायक डॉ. दोगने व जिला कांग्रेस अध्यक्ष मोहन सांई सहित समस्त कांग्रेसजनों द्वारा खातेगांव एसडीएम एवं एनएचआई के अधिकारियों को केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी एवं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौपकर नेशनल हाईवे फोर-लेन सड़क मार्ग पर व्याप्त समस्याओं के निराकरण व टोल टैक्स बंद कराये जाने की मांग की गई. सवाल उठता है कि जब हाईवे सड़क पर गड्ढे हैं तो फिर टोल टैक्स क्यों लिये जाते हैं? आम नागरिकों के अधिकारों का हनन भी नहीं होना चाहिए. सरकार को यह देखना चाहिए कि गड़बड़ी कहां और क्यों हो रही है.

हादसे रोकने के लिए मजबूत तंत्र जरूरी

मध्यप्रदेश में हादसे रोकने के लिए एक मजबूत तंत्र अभी तक नहीं है. गत दिनों इंदौर में ट्रक हादसे के दूसरे दिन इंदौर उज्जैन रोड पर बस ने एक ही परिवार के चार लोगों की जान ले ली. पूरा परिवार समाप्त हो गया तो इसके लिए जिम्मेदार किसे ठहराया जाएगा.

इस पर विचार मंथन नितांत आवश्यक है. एक के बाद दूसरे-तीसरे हादसे का होना यह दर्शाता है कि सिस्टम में कहीं न कहीं खोट तो है, जिसका तत्कालिन समाधान निकाला जाना चाहिए. खासकर राजनेताओं के बसों से हो रहे हादसे पर कार्रवाई का न होना भी यह बताता है कि सिस्टम को ठीक से चलने नहीं दिया जा रहा है. पिछले साल भी गुना बस हादसे में 12 लोगों की जान गई थी. वह बस भी एक राजनेता ही संचालित कर रहे थे.

खाद के लिए दर-दर भटक रहे हैं किसान

मध्य प्रदेश में खाद को लेकर जबरदस्त मारामारी है. आए दिन खाद को लेकर किसानों के परेशान होने की खबरें आ रही हैं तो जाहिर है कि खाद संकट है. बिंध्य क्षेत्र में खाद संकट गहरा गया है. गत दिनों रीवा के विकासखण्ड के किसान समृद्धि केंद्र पर ऐसा घटनाक्रम सामने आया कि हर कोई स्तब्ध रह गया. आदिवासी किसान प्रभु दयाल केंद्र पर टोकरा लेकर पहुंचे थे. उनका दावा है कि उन्हें पांच बोरी यूरिया की आवश्यकता थी, परंतु केवल दो बोरी देने की बात कही गई. जब उन्होंने अधिक मात्रा की मांग उठायी तो मौके पर तैनात पुलिस ने उन्हें धर-दबोचा और लात-घूँसों से मारा-जिससे वे अर्धमरा हो गए. घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसमें किसान के साथ धक्का-मुक्की और मारपीट स्पष्ट दिखाई दे रही है. मामले ने पुलिस और प्रशासन पर सवाल खड़े कर दिए हैं. रीवा और आसपास के बिंध्य क्षेत्र में यूरिया की भारी कमी के चलते किसान रातभर लाइन लगाकर टोकरा लेकर बैठे दिखाई देते हैं जाहिर है खाद को लेकर मारामारी है. जबकि सरकार के मंत्री दावा कर रहे हैं कि खाद की कोई कमी नहीं है. दरअसल खाद की कमी कोई नई बात नहीं है. सरकार भाजपा की हो अथवा कांग्रेस की खाद के लिए किसानों को मुसीबतों का सामना ही पड़ता है यह एक बड़ा सवाल है. दरअसल में खाद वितरण के लिए बनाए गए सिस्टम में बहुत खामियां हैं. पहले केवल राज्य सहकारी विपणन संघ (मार्कफेड) के गोदाम में खाद रखी जाती थी,और अब अग्रिम भंडारण के नाम पर सहकारी समितियों को दी जाती है और यहीं से गड़बड़ी और कालाबाजारी का खेल शुरू हो जाता है. खाद की आवश्यकता का वास्तविक आकलन होना चाहिए जोकि नहीं हो पाता है. अधिकारी पिछले साल की खपत के आधार पर प्रस्ताव भारत सरकार को भेज देती है जिससे वितरण व्यवस्था में संकट उत्पन्न होना स्वाभाविक है. गत दिनों पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने एक्स पर ट्वीट कर सरकार को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि मध्यप्रदेश खाद संकट में देश का अव्वल राज्य बनता जा रहा है.

किसी तीसरे पक्ष ने नहीं रुकवाया संघर्ष

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने जोर देकर कहा कि बगैर किसी तीसरे पक्ष की दखलंदाजी के ऑपरेशन सिंदूर रोक दिया गया था लेकिन यदि फिर से कोई आतंकी हमला हुआ तो यह ऑपरेशन फिर चालू कर दिया जाएगा. हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि आतंकियों के खिलाफ यह अभियान किसी की दखलंदाजी की वजह से स्थगित नहीं हुआ.

अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप का बार-बार किया गया यह दावा कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान जैसे परमाणु संपन्न देशों का संघर्ष रुकवाया, खोखला साबित हुआ है. भारत तो पहले ही कहता आया है कि ऑपरेशन सिंदूर के तहत जारी कार्रवाई भारत और पाकिस्तान के डीजीएमओ (डायरेक्टर जनरल ऑफ मिल्ट्री ऑपरेशन्स) की आपसी चर्चा के बाद रुकी और इसमें कोई तीसरा पक्ष शामिल नहीं था. अब पाकिस्तान के उपप्रधानमंत्री व विदेशमंत्री मोहम्मद इशाक डार ने भी कह दिया कि भारत ने संघर्ष रुकवाने में किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को ठुकरा दिया था. हैदराबाद मुक्ति दिवस समारोह में संबोधित करते हुए रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने जोर देकर कहा कि बगैर किसी तीसरे पक्ष की दखलंदाजी के ऑपरेशन सिंदूर रोक दिया गया था लेकिन यदि फिर से कोई आतंकी हमला हुआ तो यह ऑपरेशन फिर चालू कर दिया जाएगा. सिंह ने कहा कि कुछ लोग पूछते हैं कि क्या भारत-पाक के बीच सीजफायर किसी के हस्तक्षेप की वजह से हुआ तो हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि आतंकियों के खिलाफ यह अभियान किसी की दखलंदाजी की वजह से स्थगित नहीं हुआ. पाकिस्तान ने बार-बार सीजफायर के लिए निवेदन किया तब ऑपरेशन सिंदूर रोका गया, लेकिन यह समाप्त नहीं हुआ है. आज का भारत किसी से डिक्टेशन नहीं लेता, बल्कि अपनी स्क्रिप्ट खुद लिखता है. अब भारत ऐसी विश्वव्यवस्था की पटकथा लिखने को तैयार है जिसे सारा विश्व खुशी से स्वीकार करेगा. हमारा देश अपने शत्रुओं से सीधा मुकाबला करने में सक्षम है. जैश-ए-मोहम्मद के कमांडर ने खुद स्वीकार किया है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत के मिसाइल हमले में आतंकी सरगना मसूद अजहर के परिवार के सदस्य मारे गए. पाक सेना प्रमुख मुनीर के आदेश पर सेना के जनरल आतंकियों के जनाजे में शामिल हुए थे.

निशानेबाज

राजनीति में जरूरी वक्तृत्व कला क्या करे नेता जब बैठ जाए गला

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, गहरी चिंता का विषय है कि ज्यादा भाषणबाजी करने से हमारे प्रिय नेता का गला बैठ गया. नेता और गायक का गला बिल्कुल दुरुस्त रहना चाहिए. उनके हुनर और रोजी-रोटी का सीधा रिश्ता उनके गले से ही होता है.

हमने कहा, %गला बैठने की इतनी फिक्र न करें. राजनीति में उठना-बैठना चलता ही है. कोई उम्मीदवार पहले चुनाव में खड़ा होता है फिर हाईकमांड का दबाव आने से अचानक नाम वापस लेकर बैठ जाता है. किसी भाषणबाज निकम्मे नेता का गला भरी सभा में बैठ जाता है. गले की अहमियत देखते हुए बंद गले का कोट या जैकेट पहना जाता है. गले के डॉक्टर को ईएनटी स्पेशलिस्ट कहा जाता है, जो सिर्फ नाम, कान, गले का इलाज करते हैं. इंसान की बॉडी के बाकी अंगों से उन्हें कोई मतलब नहीं होता.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, राजनीति में गले की बहुत बड़ी भूमिका है. पुष्पहार का धंधा गले की बदौलत चमकता है. बेंगलुरु से हवाई जहाज के जरिए हाथी की सूंड के समान

मोटा फूलों का हार लाया जाता है. जनसभा में नेता को यह हार पहनाते समय 4-5 कार्यकर्ता उस हार को पकड़े रहते हैं ताकि कई किलो वजन के हार से नेता की गर्दन न लचक जाए. ऐसी तस्वीरे आपने अखबार या टीवी में देखी होंगी.

गले में महिलाएं नेकलेस पहनती हैं. वह हीरे का हो तो और भी अच्छा! हर इंसान को गले में अच्छी तरह साबुन लगाना चाहिए और टेलकम पाउडर छिड़कना चाहिए नहीं तो शर्ट का कॉलर मैला होने में देर नहीं लगती.

हमने कहा, भारतीय संस्कृति में गले मिलना आत्मीयता को दर्शाता है. द्वारकाधीश भगवान श्रीकृष्ण अपने गरीब बाल सखा सुदामा से लपककर गले मिले थे. जब हनुमानजी लंका से सीता की खोज करने के बाद लौटे तो भगवान राम ने उन्हें गले लगा लिया और कहा- तुम मम प्रिय भरत सम भाई! इसी तरह राम ने निषादराज को भी गले लगाया था. लता मंगेशकर के बारे में उस्ताद बड़े गुलाम अली खां ने कहा था कि लता के गले में खुदा बसता है. कुंदनलाल सहगल, मोहम्मद रफी, मुकेश, मन्नाडे, किशोर कुमार, हेमंत कुमार, तलत महमूद के सुरों में गले का ही कमाल था. प्रधानमंत्री मोदी विदेश के सारे नेताओं से गर्मजोशी से गले मिला करते हैं. जहां तक गला बैठने की शिकायत है नमक मिले गुनगुने पानी से गार्गल करो तो गला कभी नहीं बैठेगा!

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12027 - डॉ. सागर खादीवाला

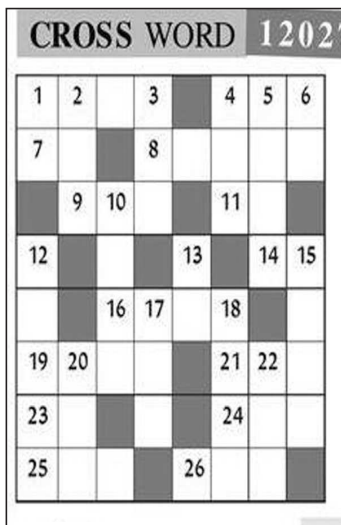

सामर्थ्य, छुटाई, गौणता इत्यादि का द्योतन करता है 2. स्पर्श, छूना 3. घेरा, चूड़ी (सं.) 4. ध्यानपूर्वक देखना 5. पृथ्वी के नीचे के लोकों का छठा लोक 6. वृक्ष का नीचे वाला भाग जिस पर डालियां नहीं होतीं 10. विनय, खुशामद 12. बैकुंठ, स्वर्ग 13. परिषद, गोष्ठी 15. बादलों का छा जाना 17. मातृभूमि (उर्दू) 18. देवता या बड़ों का प्रसन्न होने पर कोई अभीष्ट वस्तु या सिद्धि प्रदान करना 20. पराजित होना 22. आकाश

बाएं से दाएं
1. उत्पात, सार्वजनिक संकट या आपत्ति 4. हिंदुस्तान 7. पंख, लेकिन 8. लसयुक्त होना 9. वक्त, काल, मौका, अवसर 11. स्तुति-गीत (उर्दू) 14. छोटा, कम 16. नाज-नखरा 19. उस्तादी, प्राविण्य (उर्दू) 21. घर्षण 23. जल आदि के बहने या गिरने का क्रम 24. तोप, बंदूक आदि का छोड़ना 25. निषेध, मना करने की क्रिया या भाव 26. जंगल, घर (सं.)

ऊपर से नीचे
1. एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे लग कर समीपता, सादृश्य,

Solution 12026

अ	ना	र	क	ली		द	गा
चा	य		ब	द	मा	श	
र	क	म			शा	म	त
		ली	प	ना		ल	र
स	र	दा	र		शा	व	क
ल	स		दा	ह	क		श
ह	रा	मी		त्या		पा	
ज	ज		स	रा	ह	नी	य

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ मेंशिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, आकस्मिक धन लाभ का योग है, वर्ष के मध्य में व्यापार में लाभ प्राप्त होगा, शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में शारीरिक कष्ट होगा, मित्रों से व्यर्थ विवाद होगा, स्थानान्तरण का योग है, मानसिक तनाव में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ में मित्रों का विवाद हो सकता है, कर्क राशि के व्यक्तियों का शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक धन प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मानसिक तनाव रह सकता है, स्थान परिवर्तन का योग है, सिंह राशि के व्यक्तियों को राजकीय सहयोग मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, हृष्टपुष्ट, मिलनसार, धार्मिक, प्रवृत्ति का होगा. क्रोध की भावना अधिक रहेगी. शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेगा. माता पिता का विशेषभक्त होगा. प्रवास का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

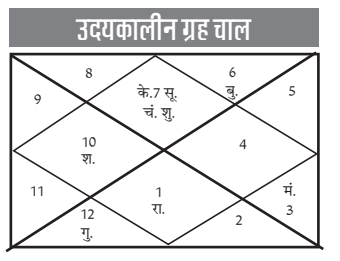

पंचांग

रा.मि. 29 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण चर्तुदशी शनिवासरे रात 11/47, मघा नक्षत्रे दिन 9/11, साध्य योगे रात 9/58, विष्टि करणे सू.उ. 5/58 सू.अ. 6/2, चन्द्रचार सिंह, पर्व- चर्तुदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रत, शु.रा. 5,7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण चर्तुदशी को मघा नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, के भाव में मंदी होगी. गुड़ खांड़ शक्कर, कालीमिर्च, धनियां, बादाम, लहसुन, प्याज, अदरक, के भाव में तेजी होगी. सरसों, अलसी, अरंडी, के भाव में नरमी रहेगी. भाग्यांक 8065 है.

मेष- कार्य क्षेत्र में लाभ होगा. नये मैत्री संपर्क स्थापित होंगे, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी. सुख मनोरंजक यात्रा का योग है.

वृषभ- शत्रु बाधा दूर होगी. जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. पारिवारिक प्रसन्नता बनी रहेगी. मानसिक संतोष और हर्षदायक वातावरण रहेगा.

मिथुन- मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. विरोधी वर्ग सक्रिय रहेंगे. धार्मिक क्षेत्र में लाभ प्राप्त होगा. कार्यो की अधिकता रह सकती है.

कर्क- आपके प्रयासों में सफलता मिलेगी. यात्रा में सावधानी व सतर्कता बांछनीय है. नवीन कार्यों में विचार विमर्श होगा. प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

सिंह- उदर विकार तथा रक्त पीड़ा से तकलीफहो सकती है. सोचे हुये कार्यों में अनावश्यक विरोध हो सकता है. पत्राचार में सावधानी रखें.

कन्या- नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा. मित्रों का सहयोग मिलेगा. दिनचर्या नियमित रहेगी. अतिथि आगमन हो सकता है. यश मिलेगा.

तुला- कोर्ट कचहरी आदि के कार्यो में सफलता मिलेगी. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. परिश्रम अधिक करना होगा. साहस पराक्रम बढ़ेगा.

वृश्चिक- संतान के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी. मनोवांछित सफलता मिलने का योग है. वाणी कटुता आपके कार्य में व्यवधान कर सकती है. संयम से कार्य करें.

धनु- रक्त संबंधियों, पड़ोसियों से संतुलित संभाषण हितकर रहेगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी. उदर विकार रह सकता है.

मकर- कार्य व्यस्तता अधिक रहेगी. सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. प्रिय संदेश प्राप्त होगा. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा. यश प्राप्त होने का योग है.

कुम्भ- नये संबंधों का लाभ होगा. मांगलिक कार्यों पर विचार होगा. परिश्रम की अधिकता रह सकती है. प्रियजनों का सहयोग बना रहेगा.

मीन- किसी अधिकारी के कारण मानसिक तनाव रह सकता है. समझौता की नीति अपनाने से लाभ होगा. मानसिक चिन्ता रह सकती है. फिजूल खर्च बढ़ेगा.

SUDOKU 7159

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7158

2	3	8	5	1	9	6	4	7
9	6	4	7	3	8	2	5	1
5	1	7	4	6	2	8	3	9
3	2	5	1	9	7	4	6	8
1	8	9	6	4	3	7	2	5
4	7	6	2	8	5	1	9	3
6	4	3	8	5	1	9	7	2
8	9	2	3	7	4	5	1	6
7	5	1	9	2	6	3	8	4

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी